REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा

डॉ. इन्नुस एस. शेख

प्रस्तावना :

इक्कीसवीं सदी को भूमणुलीकरण या वैश्विकरण की सदी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सूचना और प्रौद्योगिक के इस युग में हिंदी को नये वैज्ञानिक उपकरणों के साथ आगे आना होगा । और इसकी सौ फीसदी अधिकारिणी हिंदी है भी । अपने विशाल शब्द भण्डार, वैज्ञानिकता, शब्दों और भावों को आत्मसात करने की प्रवृत्ति के साथ ज्ञान विज्ञान की भाषा की रूप में अपनी उपयुक्तता एवं विलक्षणता के कारण आज हिंदी को विश्व भाषा के रूप में सर्वत्र मान्यता मिल रही है। लगभग 80 करोड़ आम जनों द्वारा व्यवहृत और विश्व के 176 से अधिक विश्वविद्यालयों मे पढाई जाने वाली हिंदी अंन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी है। नये आंकडों के अनुसार हिंदी के बोलने वाले विश्व में (पहले चीनी एवं अंग्रेजी) प्रथम स्थान पर हो गये हैं। हिंदी संपूर्ण भारत के जन–जन की वाणी है। भारत के भाल की बिंदी ''हिंदी'' सभी हिंदुस्तानियों द्वारा अध्ययन करने योग्य है क्योंकि हिंदी, हिंद वालों की मातृभाषा है। यह भारत एवं विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक बोली, पढी–लिखी तथा समझी जाती है। राष्ट्रभाषा हिंदी चीनी एवं अंग्रेजी को पीछे छोडते हुए विश्व की प्रथम भाषा हो गयी है, जो सर्वाधिक जनता द्वारा बोली जाती है। इसे बोलने वालों की संख्या 80 करोड से अधिक है। ये अस्सी करोड से अधिक आम जन स्वेच्छा से हिंदी बोलते है। लेशमात्र कोई विवशता, दबाव अथवा लादने वाली बात हिंदी भाषियों के संदर्भ में न है, न रही है। हिंदी भाषा का अपना एक गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। क्योंकि संसार में जिस भारत भूमि में सर्वप्रथम सभ्यता व संस्कृती का विकास प्रादुर्भाव और विकास हुआ, साथ हि जिस उर्वरा भूमि में ऋग्वेद, सांख्य, योग, दार्शनिक प्रणाली, ज्योतिष ग्रह–नक्षत्रों की दूरीः काल की गणना का निर्धारण हुआ हो, ऐसे देश की भाषा का अंदाजा सहज रूप में लगाया जा सकता है कि उसकी जड़े कितनी गहरी हो सकती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करें तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की समृद्ध परम्परा दृष्दिगोचर प्रतीत हो । अमेरिका सहित विश्व के अनेक राष्ट्रों के लगभग 176 विश्व विद्यालयों में ऐंसी भी जगह हैं जहॉ भारतीय मुल के लोग नहीं हैं तब भी वहॉ पर हिंदी बोली जाती है। यहॉ शीध का विषय यह है कि अस्सी करोड से अधिक आमजनों द्वारा बोली जाने वाली हमारी हिंदी भाषा संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थापित नहीं हो पायी है। इसके विपरीत, लगभग चालीस करोड लोगों द्वारा बोली जाने वाली स्पेनिश, क्रमशः बीस तथा इक्कीस करोड लोगों द्वारा बोली जाने वाली रूसी से हिंदी के समक्ष चुनौती है। हालांकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्थितियों में सुधार हो रहा है क्योकि हिंदी भाषा की जडें विश्व के कई देशों में काफी गहरी है। अतीत का अवलोकन करें तो विश्व स्तर पर हिंदी के प्रचार–प्रसार में तात्कालिक स्थितियों का विशेष महत्व है, क्योंकि यहॉ के प्रवासी भारतीय (पुरखों) स्वाधीनता से पूर्व से लेकर स्वाधीनता के उपरान्त द्वारा हिंदी अन्य देशों में ले जायी गयी है। फिजी, मारोशस, ट्रिनीदाद, सूरीनामा, गुयाना उस श्रेणी के देश है जहॉ हिंदी का प्रयोग प्रवासी भारतीयों के द्वारा किया जाता रहा है या किया जा रहा है। इसका प्रमुख कारण धर्म एवं संस्कृति है क्योंकि भाषा ही इसकी वास्तविक संवाहिका होती है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में प्रवासी भारतीयोंने हिंदी भाषा के प्रति अनुराग का परिचय दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने संघर्ष कि शुरूवात ही प्रवासी अफ्रीकी लोगों के बीच शुरू की।

हमारे देश के युवा शक्ति के प्रतीक सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज तथा आजाद हिंद सरकार की स्थापना दक्षिण–पूर्व ऐशिया में की थी। इन दोनो महापुरूषोंका माध्यम भाषा के रूप में हिंदी था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो आज जो भी प्रवासी है– विदेशों में जब भारतीयों से आपस में मिलते–जुलते है तो टुटी–फुटी हिंदी मे ही बात करते थे। इसके लिए जरूरी नही की उनकी हिंदी परिनिष्ठित ही हो। कनाडा, अमेरिका, रूस, ब्रिटेन या अन्य स्थानों में ऐसे भारतीय जिनकी भाषा हिंदी नही है, वे पहले स्थानीय भाषा या कामन भाषा में परिचय करके बाद में हिंदी को ही आधार बनाकर बातचीत करना पसंद करते है।

यदि हम त्रिनीदाद की बात करें तो वहॉ भारतीय सन 1845–1917 में पहुॅचे। तब इनकी संख्या लगभग एक–डेढ लाख रहि होगी। ये भारतीय पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के निवासी थे। इनकी मुल भाषा में भोजपुरी, मैथिली, तथा अंग्रेजी का मिश्रण मिलता है। ये लोग आपस में बोलचाल के रूप में 'पवडा' जिसे पुरानी हिंदी कहा जाता था। असी का प्रयोग करते थे, आज भी प्रवासी लोगो के लिए यहॉ स्कुलों में सनातन धर्म एसोसिएशन के प्रयास से हिंदी भाषा के अध्ययन/अध्यापन कि व्यवस्था की जाती है। शिव, नारायण एवं कबीर के पंथ द्वारा भी इस दिशा में कार्य किए जा रहे हैं। त्रिनिदाद, टोबेगो, द्वीप में भारतीयों का हिंदी प्रेम सर्वविदित है। कोहेनुर और आर्य संदेश ज्योति जैसी प्रमुख पत्रिकाएॅ यहॉ प्रकाशित कि गई हैं। यदयपि इन कृतियों में धर्म प्रचार ही अधिक था। भारतीय विद्या संस्थान द्वारा प्रकाशित ज्योति यहॉ की सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रिका है। जिसके द्वारा इन क्षेत्रो में हिंदी का व्यापक प्रसार होता आया है।

जपान सहित अन्य एशिआई देशों में हिंदी का प्रयोग 1911 के लगभग शुरू हुआ। यहॉ पर इसी वर्ष तोक्यो स्कुल ऑफ फॉरेन लैंग्वेज की स्थापना की गई। वर्तमान में यह 'त्योंक्यो युनीवर्सिटी ऑफ फॉरेन लैंग्वेज के नाम से जानी जाती है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग अप्रत्यक्ष रूप से जपान मे हिंदी के अध्ययन की सदृढ स्थिती करने के लिए सराहनीय कार्य करता रहा है। क्योंकि जपान से छात्रो एवं फ्रोफेसरों का यहॉ आना–जाना लगा रहता है।

प्रो. दोई ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सन 1953–55 ई. मे आकर अध्ययन किया था। आपको सबसे महत्वपुर्ण कार्य जापानी हिंदी तथा हिंदी जापानी कोर्स तैयार करने का है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिती बर्धा की परिक्षाओं में बहुत से जपानी विद्यार्थी सम्मिलित होत रहते हैं। गांधी संस्थान एवं क्योटा नगर भी प्रचार–प्रसार के कार्य कर रहा है। जापान में 'ओसाका यूनीवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडिज' में हिंदी अध्यापन की उचित व्यवस्था की गयी है।

विश्व भाषा के रूप में हिंदी का विकास उसके गुणों के के कारण ही हो रहा है। साहित्यिक धार्मिक तथा सामाजिक चेतना के लिए हिंदी की पहचान भारत के बाहर के देशो में भी हुई है। फ्रांस, चीन, हॉगकॉग, सुडान, ऑस्ट्रोलिया, इजराइल आदी राष्ट्रो में हिंदी के शिक्षण/ अध्ययन की समुचित व्यवस्था है। युरोपीय देशों में कुछ ने हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में अति महत्वपुर्ण कार्य किया है। इनमें से फ्रांस की राजधानी पेरिस में आपने हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास फ्रेंच भाषा में लिखा, फ्रांस में हि आधुनिक विश्व–पूर्वी भाषाओं का संस्थान सन 1975 ई.में स्थापित किया गया था। इस संस्थान में शिक्षण कार्य गार्सा–द–तासी एवं ज्युलढलाक ने किया है। अनुसंधान अध्यापन के क्षेत्र में श्रीमती डॉ. वौदवील का योगदान भी महत्वपुर्ण माना जाता है। इस संस्थान में इस समय हिंदी की स्थिती सर्वाधिक सदृढ मानी जाती है क्योंकि यह संस्थान हिंदी के साथ बंगाला, तमिल एवं उर्दु पढाने की व्यवस्था भी कर रहा है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में सन 1975 ई.स में हिंदी भाषा का व्याकरण अमेरिकी निवासी सैमुल कैगाल ने हिंदी का अनुशीलन करके तैयार किया।हिंदी व्याकरण कि दृष्टी से यह एक महत्वपुर्ण ग्रव्य माना जाता है। भारत को स्वतंत्रता जब मिली तब अमेरिका के विश्वविद्यालयों मे अध्ययन/अध्यापन की समुचित व्यवस्था कि गई। वर्तमान की बात करे तो अमेरीका के 35 विश्वविद्यालयों में हिंदी की शिक्षा हेतू भेजा जाता है। स.रा.संघ के देशों में भारतीय पुस्तको एवं पत्र–पत्रिकाओं की मॉग अधिक रहती है। और वहॉ के पुस्तकालयों में इन्हे मंगाया जाता है। सम्प्रति अमेरिका से प्रकाशित होनेवाली हिंदी पत्रिकाओं मै 'सौरभ' और 'विश्व विवके' के नाम उल्लेखनीय है।

सोवीयत रूस और भारत की दोस्ती जगजाहिर है क्योंकि इस मैत्री का आधार सांस्कृतिम आधार रहा है। भारतीय लेखकों की रचनाओं के प्रति रूचि एवं सम्यक ज्ञान रखते है। महाकवी तुलसीदास के रामचरित मानस का सफल रूरी अनुवाद वेरान्निकोव ने किया है। अन्य महत्वपुर्ण रूसी हिंदी के विद्वान वी चेरनीगोव, वी

क्रेस कोविन एवं बाबालिन हैं। रूस में हिंदी की एक बोली नाजिकी विकसित हुई है। पिछली कई दशकों के रूप में हिंदी भाषा में विविध विषयो (आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक) पर पुस्तके प्रकाशित हो रही है। इसके साथ हि समसामयिक पत्रिकाओं का प्रकाशन वितरणा भी होता है, प्राथमिक स्तर तक हिंदी पढाने की उत्तम व्यवस्था रूस में विघटन के बावजुद आज भी सतत है।

ब्रिटेन के परिप्रेक्ष्य मे जब हम देखते है तो वहॉ सन 1921 में 'इन्स्टीटयुट ऑफ ओरियन्टल स्टडीज' की स्थापना के साथ भारतीय भाषाओं और हिंदी साहित्य का अध्ययन आरम्भ हुआ।

ब्रिटेन में हिंदी प्रचार–प्रसार का कार्य 'हिंदी प्रसार परिषद' के तत्वाधान में हो रहा है। साथ ही इस परिषद के द्वारा 'प्रवासिनी' नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन भी होता है। लंदन से ही प्रकाशित देस, परदेस, पुरवाई प्रमुख हैं। मारीशस द्वीप ने हिंदी साहित्य के विकास में पर्याप्त योगदान किया है। क्रियोल मिश्रित भोजपुरी यहॉ की जनता में प्रयुक्त होती है। इस भाषा में सर्वनाम, विभक्तियॉ, तथा क्रियायें हिंदी की होती हैं पर शेष शब्द क्रियोल से लिये होते हैं। इस द्वीप में साहित्य की लगभग सभी विधाओं काव्य, उपन्यास, कहानी तथा नाटक आदि का साहित्यिक सृजन हुआ है। यहॉ के प्रमुख साहित्यकार जिन्होंने प्रारम्भ में यहॉ पर हिंदी साहित्य की गरिमा को स्थापित किया है में प्रो. वासुदेव विष्णु दयाल, ब्रजेन्द्र भगत मधुकर एवं जयनाराण राय का नाम प्रमुख है। यहॉ के सबसे महान उपन्यासकार अभिमन्यु अनंत हैं। आपकी ग्यारह से अधिक कृतिया अकेले भारत में ही प्रकाशित हो चुकी हैं। इनका सबसे प्रमुख उपन्यास 'लाल पसीना' है। पत्रों के माध्यम से यहॉ की साहित्य परम्परा में पर्याप्त वृध्दि हूई है। 'बसंत' तथा 'अनुराग' पत्रों मे कहानी का के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है। कहानियों का प्रमुख संग्रह 'नए अंकुर' प्रमुख हैं। नाटकों में 'जीवन संगिनी' 1941 का जयनारायण राय द्वारा रचित माना जाता है। एकांकियों में 1951 में ब्रजेन्द्र भगत के 'आदर्श बेटी' का प्रकाशन किया गया। निबंधों का प्रकाशन भी मारीशस में होता है और इनका प्रमुख विषय धार्मिक होता है। यहॉ से प्रकाशित होने वाली प्रमुख विषय पत्रकिओं के नाम जनता, आर्योदय, बसंत भारती मासिक महात्मा गॉधी संस्थान से निकलती है। जब हम बर्मा की बात करते हैं तो हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में इसका विशेष महत्व है। यहॉ के प्रत्येक जिले में हिंदी के पठन–पाठन की समुचित व्यवस्था की गयी है। यहॉ बसे प्रमुख प्रवासियों मे गुजरती, सिक्ख एवं मारवाडी हैं। ये आपसी व्यवहार में हिंदी का प्रयोग करते हैं। वर्तमान में यहॉ नवोदित लेखकों ने भी हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान में जर्मनी 8 पूर्वी तथा पश्चिमी कार्लमार्क्स विश्वविद्यालय, लाइपजिंग तथा मार्टिन लूथर किंग विश्वविद्यालय में हिंदी शिक्षा की व्यवस्था है। यूगोस्लाविया आदि देशों में भी हिंदी माध्यम से शिक्षा दी जा रही है। आस्ट्रोलिया महाद्वीप में हिंदी का प्रचार–प्रसार तेजी से बढ रहा है। विदेशी में प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्र–पत्रिकाओं में 'चीन सचित्र' सर्वाधिक ब्रिकी वाली पत्रिका है। नार्वे मे प्रकाशित हिंदी पत्र–पत्रकिओं में 'शांतिदूत' ही सर्वाधिक नियमित एवं उल्लेखनीय पत्रिका है। श्रीलंका में भी हिंदी की लोक प्रियता दिनोदिन बढ रही है। श्रीलंका में सब लोग हिंदी भाषा बहुत ही पसंद करते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि हिंदी के संगीत जैसा अन्य कोई माधुर और कर्णप्रिय संगहत दुनिया भर में कही नहीं है।

इस तरह विश्व परिदृश्य में हिंदी के प्रचार–प्रसार को देखते हुए ऐसा लगता है कि अ बवह समय दूी नहीं जब इसे संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा न बनाया जा सके। क्योंकि हिंदी भाषा आज साहित्य लेखन वाचन तथा गायन आदि के रिवाज से हटकर अब दैनंदिन जीवन से लेकर विज्ञान प्रौदयोगिकी तथा व्यापार प्रबंधन आदि प्रत्येक क्षेत्र में यह अपनी उपस्थिती दर्शा चूकी है। 'भाषा के इस नव्यतम रूप का युगानुकुल परिवर्तन एवं नवसृजन अत्यन्त तीव्र गति से ही हो रहा है क्योंकि विश्वस्तर पर बढ रहे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक अन्तः सम्बन्धों के कारण वैचारिक स्तर पर एक वैश्विक चेतना का प्रादुर्भाव हो रहा है जिससे समूचे विश्व में हिंदी भाषा को एक नयी दृष्टि मिल रही है और अन्तर्राष्ट्रीय विचार धाराओं का परि प्रेक्ष्य वर्तमान हिंदी साहित्य में पूर्णतः परिलक्षित हो रहा है। छह महाद्वीपों के सात सागरों से टकराता हुआ भारत, भारती को विश्व भारती के पद पर आसीन करेगा। हमें उस दिन का अब बहुत इन्तजार नहीं करना पडेगा जब आचार्य विनोबा जी का वह संकल्प सार्थक होगा जिसे उन्होंने इस वाक्य के द्वारा अभिव्यक्त किया था– 'हिंदी को गंगा नहीं, समुद्र बनाना होगा।'